Introduction

भू मि का

सन् 1961 ई0 तक के विद्यार्थी जीवन में पं0 भगवतीप्रसाद वाजपेयी की दो कहानियों - 'मिठाई वाला' तथा 'निंदिया लागि' - ने मुझे जितना आकृष्ट तथा प्रभावित किया था, इतना किसी अन्य हिन्दी कहानी ने नहीं। तबसे मन में एक इच्छा एवं संकल्प था कि समय मिलने पर वाजपेयी जी की अन्य रचनाओं का भी अध्ययन करूँगा, उसी संकल्प का परिणाम प्रस्तुत प्रबंध का लेखन है।

पी-एच0डी0 के सिलसिले में अनेक बार श्रद्धेय डा0 मदनगोपाल गुप्त(अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कला संकाय, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,बड़ौदा) से भेंट हुई। मुझे हिन्दी कथा-साहित्य में अत्यंत रुचि है यह जानकर तथा मेरी रुचि को परखकर उन्होंने तथा श्रद्धेय डा0 दयाशंकर शुक्ल ने मुझे वाजपेयी जी के कथा-साहित्य पर शोध-कार्य करने की प्रेरणा दी और विषय पंजीकृत भी हो गया।

वाजपेयी जी ने अब:पर्यन्त लगभग 71 पुस्तकों का साहित्य की विविध विधाओं को लेकर सृजन किया है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध में उनके केवल कथा-साहित्य का अनुशीलन किया गया है। उनके कथा-साहित्य के अन्तर्गत लगभग 45 उपन्यास तथा 17 कहानी-संग्रहों का समावेश होता है। उन्होंने सन् 1922 ई0 से लिखना प्रारम्भ किया था। तबसे आज तक वे लगभग 73 वर्ष की वृद्धावस्था में भी निरन्तर लिखते आ रहे हैं। दुर्भाग्य की बात तो यह है कि साहित्य-सृजन के अपने आरंभिक दिनों में एक लघु कथाकार के रूप में 'रिकग्निशन' मिलने पर भी उनके साहित्य का उचित मूल्यांकन नहीं हो सका। हिन्दी-साहित्य की गुटबंदी के कारण उनके साहित्य की ओर आलोचकों ने पर्याप्त ध्यान नहीं दिया। इतना ही नहीं, एक अपेक्षित कथाकार की उपेक्षा की गई। उनकी 50 वर्ष से भी अधिक समय की साहित्य-साधना का मूल्यांकन पाँच वर्ष की समयावधि में करना अत्यंत कठिन कार्य है, तथापि वाजपेयी जी

के कथा-साहित्य का शोध परक अध्ययन करने की दिशा में लेखक का यह लघु प्रयास है ।

वाजपेयी जी के कथा-साहित्य का क्षेत्र मुख्यरूप से समाज रहा है । समाज में उन्होंने जो कुछ देखा, भोगा, उसी को अपनी रचनाओं में चित्रित किया है ।वाजपेयी जी के सम्पूर्ण कथा-साहित्य पर अब तक कोई महत्त्वपूर्ण शोध कार्य नहीं किया गया है । कुछ आलोचना-ग्रंथों में उनके उपन्यासों पर अथवा उनकी औपन्यासिक कला पर किंचित् चर्चाएँ अवश्य उपलब्ध होती है, कुछ पत्र-पत्रिकाओं में उनके जीवन तथा साहित्य पर कुछ लेख भी प्रकाशित हुए हैं । 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' (दिनांक 27 अक्टूबर, 1963) में उनकी वर्षगांठ के अवसर पर श्री सोमचंद्र 'सुमन' का एक लेख भी प्रकाशित हुआ था । डा० ललित शुक्ल तथा डा० बैजनाथ गुप्त की पुस्तकें भी उनके कुछ उपन्यासों को लेकर प्रकाशित हुई हैं । उन पुस्तकों में वाजपेयी जी के जीवन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालने वाली कुछ सामग्री अवश्य प्राप्त होती है ; किन्तु यह पर्याप्त नहीं कही जा सकती । इस सामग्री का प्रस्तुत प्रबंध में यथोचित उपयोग किया गया है । तथापि वाजपेयी जी की जीवनी, व्यक्तित्व तथा कथा-साहित्य के मूल्यांकन के विषय में इन सभी लेखकों से अपना दृष्टिकोण सर्वथा भिन्न रहा है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को मुख्य रूप से दो खण्डों में विभाजित किया गया है । प्रबन्ध के प्रथम खण्ड के प्रथम अध्याय में वाजपेयी जी की जीवनी प्रस्तुत की गई है । अध्याय के प्रारंभ में उनका वंश परिचय दिया गया है । उनका वंश-परिचय अन्यत्र उपलब्ध नहीं है । वंश-परिचय के पश्चात् उनके जन्म, बाल्यकाल, शिक्षा-दीक्षा, विवाह और संतति, व्यावसायिक जीवन , संपर्क, कार्यक्षेत्र आदि को ध्यान में रखकर उनकी जीवनी विस्तारपूर्वक देने का प्रयत्न किया गया है । इससे कितनी ही अप्रकट बातें प्रकाश में आई हैं । सन् 1968 ई० के अक्टूबर मास में उत्तरप्रदेश की अपनी शोध-यात्रा

के समय प्रबंध-लेखक का वाजपेयी जी से साक्षात्कार हुआ, तब वह वाजपेयी जी के कानपुर के निवास-स्थान पर तीन दिन रहा एवं आतिथ्य का अनुभव किया। उस समय जो प्रश्न उन्हें पूछे गये उन प्रश्नों के उन्होंने सहज भाव से उत्तर दिये। इसके अतिरिक्त उनसे अतीत के जो संस्मरण सुने तथा तब से लेकर आजपर्यन्त जो पत्र-व्यवहार होता रहा इसका उपयोग विशेषत: इस अध्याय में यथा-स्थान किया गया है। इससे प्रबंध की मौलिकता बढ़ी है। उनके जीवन तथा व्यक्तित्व के विषय में हिन्दी-साहित्य के प्रखर आलोचक डा० रामविलास शर्मा, लब्ध-प्रतिष्ठ कथाकार श्री अमृतलाल नागर आदि से साक्षात्कार करने पर लेखक ने जो प्रश्न उनसे पूछे थे, उनके उत्तरों का यथा-स्थान उपयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त सर्वश्री इलाचंद्र जोशी, उपेन्द्रनाथ अश्क, डा० ललित शुक्ल, श्री व्रजेन्द्र गौड़ आदि के पत्रों से भी इस प्रबन्ध-लेखन में सहायता ली गई है। वाजपेयी जी की जीवनी से सम्बन्धित बातों की जानकारी प्राप्त होने से उनके संघर्षपूर्ण जीवन का भी पता चलता है। इस संघर्षपूर्ण जीवन के कारण ही उन्हें विवश होकर व्यवसायी लेखक बनना पड़ा, इस तथ्य पर समुचित विचार किया गया है। साहित्यकार अपनी रचनाओं के पात्रों के माध्यम से अपने विचार प्रकट करता है, अत: इसी अध्याय में वाजपेयी जी की विचारधारा पर भी विचार किया गया है। सामान्यत: कोई भी साहित्यकार प्रत्यक्ष रूप से अपने विचार प्रकट नहीं करता। अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए वह अपनी कृतियों के पात्रों का सहयोग अवश्य लेता है। वाजपेयी जी ने भी अपने विचार प्रकट करने के लिए अपने कथा-साहित्य के पात्रों का आश्रय लिया है। वे जो कुछ कहना चाहते हैं उसे अपने पात्रों से कहलवा लेते हैं। इस प्रकार उनके कथा-साहित्य में उनके विचारों का प्रतिबिम्बन् मिल जाता है। इसमें राजनीतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक विचारों की ही मीमांसा की गई है। उनकी कहानियों में इन तीनों विचारों के अतिरिक्त साहित्यिक विचार भी प्राप्त होते हैं; अत: कहानियों में प्रकट विचारधारा के अन्तर्गत साहित्यिक विचारों का भी उल्लेख किया गया है। इस अध्याय में वाजपेयी जी से सम्बंधित विभिन्न कथाकारों तथा साहित्यकारों से प्राप्त जानकारी तथा उनके कथा-साहित्य में प्रतिबिम्बित विचारधारा

की मीमांसा लेखक का निजी प्रयास है ।

द्वितीय अध्याय के प्रारंभ में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों एवं विद्वानों द्वारा दी गई व्यक्तित्व की परिभाषा पर विचार करने के पश्चात् लेखक ने व्यक्तित्व के विषय में अपना मंतव्य भी दिया है । तदनन्तर वाजपेयी जी के व्यक्तित्व के-अन्त: एवं वाह्य- दोनों पक्षों को स्पर्श किया गया है । दोनों पक्षों के संयोजन से ही किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व सम्पूर्ण बनता है । वाह्य व्यक्तित्व के अन्तर्गत उनके शारीरिक गठन, परिधान, रहन-सहन, अभिरुचियाँ, दिनचर्या, व्यसन, मनोविनोद, आचार-व्यवहार, आतिथ्य भाव, स्पष्टवादिता आदि को केन्द्र में रखकर विश्लेषण किया गया है । उनके व्यक्तित्व के अंतर्वर्ती स्वरूप के अन्तर्गत उनके स्वभाव, बौद्धिक गुण, सहृदयता, मानवता, सहनशीलता, भावुकता, प्रकृतिप्रेम, औदार्य, स्नेह-सद्भाव, सामाजिकता, त्याग तथा दुर्बलता आदि अंततत्त्वों को लिया गया है तथा उनका विश्लेषण किया गया है । वाजपेयी जी एक साहित्यकार हैं ; अत: उनके साहित्यिक व्यक्तित्व के विविध पहलुओं पर भी विचार किया गया है । इसके अंतर्गत उनके विभिन्न रूपों - कवि, तार्किक, हास्य-व्यंग्यकार, नाटककार एवं कथाकार - पर प्रकाश डाला गया है । उनके व्यक्तित्व का निर्माण करने वाले इन सभी तत्त्वों का प्रतिबिम्बन् उनके कथा-साहित्य में हुआ है ; अत: यथास्थान उद्धरण भी दिये गये हैं । विभिन्न उद्धरणों को छोड़कर वाजपेयी जी के अंतर्वाह्य स्वरूप का विवेचन लेखक का अपना प्रयास है ।

द्वितीय खण्ड के प्रथम अध्याय में वाजपेयी जी के कथा-साहित्य का वर्गीकरण किया गया है । यह वर्गीकरण विषय-वस्तु को लक्ष्य में रखकर किया गया है । वाजपेयी जी के कथा-साहित्य को मुख्यत:- सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक - दो वर्गों में विभाजित किया गया है । वर्गीकरण के पश्चात् उनके उपलब्ध प्रमुख उपन्यासों तथा कहानियों का संक्षिप्त परिचय आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है । रचनाओं के विवेचन में

लेखक ने तटस्थ्य का बराबर ध्यान रखा है । जहाँ विद्वानों से मतांतर हुआ है वहाँ उचित प्रमाण देकर अपने मत की लेखक ने पुष्टि की है । इस अध्याय में रचनाओं का वर्गीकरण लेखक का मौलिक प्रयास है ।

द्वितीय अध्याय में वाजपेयी जी के कथा-साहित्य के शिल्प (Technique) की चर्चा की गई है । वाजपेयी जी के अर्ध शती से भी अधिक लम्बे लेखन-काल में शिल्प की दृष्टि से हिन्दी कथा-साहित्य में महत्त्वपूर्ण प्रयोग हुए हैं । उनमें से किस शिल्प-विधि का वाजपेयी जी ने अनुसरण किया है अथवा अपनी मौलिक शिल्प-विधि का अपनी रचनाओं के सृजन में प्रयोग किया है तथा उनके शिल्प की क्या विशेषताएँ हैं, यह दिखाने का प्रस्तुत अध्याय में प्रयास किया गया है । इस अध्याय के प्रारंभ में भिन्न-भिन्न शिल्प-विधियों का संक्षेप में परिचय दिया गया है । तदनन्तर प्रत्येक शिल्प-विधि में रचे गये वाजपेयी जी के उपन्यासों में से किसी एक अति महत्त्वपूर्ण उपन्यास का सम्यक् विवेचन प्रस्तुत किया गया है । कहानियों के शिल्प में जो अधिक महत्त्वपूर्ण रही हैं, उनका विवेचन किया गया है । विवेचन प्रारंभिक उपन्यासों की भाँति ही वाजपेयी जी की प्रारंभिक कहानियों में शिल्प की दृष्टि से कोई नवीन बात देखने को नहीं आती है ।

तृतीय अध्याय के प्रारंभ में उपन्यास में चरित्र-चित्रण की अनिवार्यता स्वीकारने के पश्चात् भिन्न-भिन्न विद्वानों द्वारा दी गई चरित्र-चित्रण की विभिन्न प्रणालियों पर विचार किया गया है । इसके उपरान्त यह दिखाया गया है कि वाजपेयी जी के उपन्यासों में चरित्र-चित्रण की कौन कौन -सी प्रणालियों का प्रयोग हुआ है । उनके उपन्यासों के कुछ प्रमुख पुरुष एवं नारी पात्रों का चरित्र-विवेचन भी किया गया है । इसी अध्याय में वाजपेयी जी की कहानियों में प्राप्त चरित्र-चित्रण की विशेषताओं पर विचार करने के पश्चात् प्रधान पुरुष एवं नारी पात्रों का क्रमशः चरित्र-विवेचन

किया गया है । इसके अन्तर्गत यह बतलाया गया है कि उनकी कहानियों में पुरुष पात्रों की अपेक्षा नारी पात्र अधिक सशक्त होते हैं , अत: वे पुरुष पात्रों पर छा जाते हैं ।

चतुर्थ अध्याय के प्रारंभ में यह दिखाया गया है कि कथा-साहित्य में देशकाल अथवा वातावरण का निर्माण लेखक ने कुशलतापूर्वक किया है या नहीं । वातावरण-निर्माण में प्रकृति ने कहाँ तक साथ दिया है, इसका भी विवेचन किया गया है । वाजपेयी जी के कथा-साहित्य में प्राप्त सामाजिक,आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिस्थितियों पर भी विचार किया गया है । निष्कर्ष रूप में यह बतलाया गया है कि तत्कालीन समाज का प्रतिबिम्बन करने में वाजपेयी जी को पूर्ण सफलता मिली है ।

पंचम् अध्याय में वाजपेयी जी के कथा-साहित्य में प्राप्त संवादों पर विचार किया गया है । प्रस्तुत अध्याय के प्रारंभ में कथा-साहित्य में संवादों की आवश्यकता तथा महत्त्व दिखाकर उनका प्रयोग किन-किन उद्देश्यों से कथानक में किया जाता है, यह तो बतलाया ही है, इसके अतिरिक्त विभिन्न भावानुरूप संवाद सम्बंधी विचार भी किया गया है । इसके अंतर्गत मनुष्य के भीतर उत्पन्न होने वाले विभिन्न भावों का अवलम्ब लिया गया है । अंत में संवादों के आवश्यक गुणों की चर्चा भी की गई है । इसी अध्याय में वाजपेयी जी की कहानियों के संवादों पर भी लेखक ने विचार किया है । इसमें यह बतलाया गया है कि वाजपेयी जी ने अपनी कहानियों में किन उद्देश्यों को लेकर संवादों का प्रयोग किया है । तत्पश्चात् उनकी विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला गया है । भावानुरूप संवाद की व्याख्या लेखक का निजी प्रयास है ।

षष्ठ अध्याय में वाजपेयी जी के कथा-साहित्य की भाषा-शैली पर विचार किया गया है । प्रारंभ में भाषा एवं शैली का पृष्ठभूमि के रूप में सामान्य विवेचन प्रस्तुत किया गया है । तत्पश्चात् वाजपेयी जी की भाषा में प्रयुक्त विविध

भारतीय एवं विदेशी भाषाओं के शब्द-भण्डार पर लेखक ने विचार किया है । आगे यह भी बताया गया है कि कथा-साहित्य में प्राप्त मुहावरों-कहावतों, उक्तियों एवं सूक्तियों के प्रयोग ने किस प्रकार वाजपेयी जी की भाषा को समृद्ध बनाया है और उनकी रचनाओं की भाषा-शैली को वैभव, सौंदर्य, गौरव तथा अमरत्व प्रदान किया है । भाषा के गुणों के साथ-साथ उसके छोटे-मोटे दोषों पर भी संकेत कर दिया गया है । भाषा की इन सीमाओं में विशेषत: लिंग दोष, औचित्य दोष,वाक्य दोष आदि पर विचार हुआ है । शैली के अंतर्गत उसके बाह्य और आंतरिक-दोनों रूपों पर विचार किया गया है तथा शैली के विभिन्न प्रकारों का सोदाहरण विवेचन प्रस्तुत किया गया है । निष्कर्ष रूप में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि पचास वर्षों से भी अधिक लेखनकाल की अवधि में वाजपेयी जी की भाषा में कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं होता । हाँ, उनकी सन् 1940 ई० के बाद की रचनाओं की भाषा सुश्रृंखलित अवश्य है ।

सप्तम् तथा अंतिम अध्याय उपसंहार का है । पिछले अध्यायों में हम वाजपेयी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सांगोपांग अध्ययन कर चुके हैं । इसी के आधार पर प्रस्तुत अध्याय में समकालीन कथाकारों में वाजपेयी जी का स्थान क्या है, यह बतलाने का प्रयत्न किया है गया है ।

अन्त में आभार प्रदर्शन का प्रमुख, महत्त्वपूर्ण तथा शिष्ट कार्य सम्पन्न करने के लिए निमित्त में महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष श्रद्धेय डा० मदनगोपाल गुप्त के प्रति हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने अति - व्यस्तता के बावजूद भी समय निकालकर अपने अमूल्य सत्परामर्श से मुझे लाभान्वित किया एवं प्रबन्ध के कुछ अध्याय स्वयं देखकर लेखक को प्रोत्साहित किया । लेखक डा० रामविलास शर्मा, डा० भगवतशरण उपाध्याय तथा हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ कथाकार अमृतलाल नागर का हृदय से आभारी है जिन्होंने साक्षात्कार के लिए अपना अमूल्य समय ही नहीं दिया, अपितु लेखक द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देकर अत्यन्त उपकृत भी किया है । पूज्य

वाजपेयी जी ने साक्षात्कार के पश्चात् भी समय-समय पर लेखक द्वारा पूछे गये प्रश्नों का नियमित रूप से उत्तर दिया तथा लेखक के कार्य को सरल बनाने में जिस सहयोग तथा सहृदयता का परिचय दिया, इसके लिए लेखक उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता है। लेखक श्री इलाचन्द्र जोशी, श्री उपेन्द्रनाथ अश्क, डा० ललित शुक्ल तथा श्री व्रजेन्द्र गौड़ का भी अत्यंत आभारी है जिन्होंने उन्हें पूछे गये प्रश्नों का उत्तर यथाशीघ्र देने का प्रयत्न किया। राष्ट्रभाषा प्रचारक मण्डल पुस्तकालय, सूरत के संचालक श्रीयुत् साकरचंद सरैया का भी लेखक अत्यंत आभार मानता है जिन्होंने उक्त पुस्तकालय का उपयोग करने के लिए लेखक को अनुमति दी। लेखक डा० भगीरथ मिश्र (प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सागर विश्वविद्यालय) के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करता है जिन्होंने ~~उन्हें~~ लेखक के पूछे गये प्रश्नों के उत्तर तो दिये ही इसके अतिरिक्त लेखक की प्रार्थना स्वीकार करके प्रस्तुत शोध-प्रबंध की रूपरेखा (Synopsis) तैयार करने में पूर्ण सहायता करने की महती कृपा भी की। श्रीयुत् दुबे जी के सहयोग का लेखक को सदैव स्मरण रहेगा जिन्होंने यथा-समय टंकन कार्य पूर्ण किया। मन के भावों को शब्दों में अभिव्यक्त कर पाना मेरे लिए सबसे कठिन कार्य है, तथापि मैं अपने प्रबन्ध-निर्देशक डा० दयाशंकर शुक्ल के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। उनकी सतत प्रेरणा, प्रोत्साहन, स्नेह तथा सहयोग के कारण ही यह कार्य सफल हो सका है।

-सुरेन्द्र दोशी

(सुरेन्द्र दोशी)

00000
000
0